पंजीयन संख्या : 68939/98   अंक - 17, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

455

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 15.09.2024

प्रकाशन की तारीख 01.09.2024

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचास पैसे)

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख

१ मजबूर सरकार में उपद्रवियों की पौ बारह :

4 जून के नतीजे के बाद यह बात साफ हो गई है कि नरेंद्र मोदी अब किसी प्रकार का बदलाव करने की स्थिति में नहीं है। नरेंद्र मोदी का मनोबल भी गिरा है और परिस्थितियां भी अनुकूल नहीं है। एक तरफ देश विरोधी, साम्यवादी, सांप्रदायिक तत्व और नेहरू परिवार नरेंद्र मोदी को चुनौती दे रहा है। दूसरी ओर ब्लैकमेल करने वाली ताकतें भी इस अवसर का लाभ उठाने की लगातार कोशिश कर रही हैं। हम देख रहे हैं कि किसानों के नाम पर गुंडे, सशक्तिकरण के नाम पर चरित्रहीन महिलाएं, महिला व जातीय आरक्षण के नाम पर सारे देश को लूट कर खाने वाले, संविधान के नाम पर सांप्रदायिक मुसलमान लगातार ब्लैकमेल कर रहे है। मजबूरी में नरेंद्र मोदी को इन ब्लैकमेल करने वालों के साथ समझौते करने पड़ रहे हैं। बहुत अच्छे-अच्छे कानून वापस लेना नरेंद्र मोदी की मजबूरी है, क्योंकि सरकार बचाने के लिए ब्लैकमेल करने वालों से समझौता करने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। हम नरेंद्र मोदी की मजबूरी को समझते हैं, लेकिन हम इस मजबूरी के कारण, इस तरह देश विरोधी तत्वों को मजबूत होने देने के पक्ष में नहीं है। हम तो इस बात के पक्षधर हैं कि यदि संविधान का कोई प्रावधान समाज के लिए घातक हो रहा है, तो संवैधानिक तरीके से उस प्रावधान को भी बदला जाना चाहिए। आज भले ही राजनीति की आवश्यकता ना हो लेकिन समाज की तो आवश्यकता है, इसलिए हम लोग इस बात पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं, कि नरेंद्र मोदी राजनीतिक आधार पर सहायता के पात्र हैं लेकिन हम लोगों को सामाजिक आधार पर अब इस लाइन से हटकर भी कुछ सोचना होगा। निरंतर समाज को ब्लैकमेल करने वाले संविधान और राजनीतिक मजबूरियों का लाभ उठाकर समाज का शोषण न कर सकें, इसकी चिंता अब समाज को स्वयं करनी होगी। अभी-अभी कांग्रेस अध्यक्ष ने भी यह कहा है कि सरकार अल्पमत में है, कई मुस्लिम आतंकवादियों ने भी कश्मीर में सिर उठाना शुरू कर दिया है, क्योंकि उन्हें भी पता है कि अब केंद्र में नेहरू परिवार मजबूत हो गया है। इन परिस्थितियों में अब समाज को एकजुट होकर गंभीरता से विचार करना चाहिए। हम लोगों ने इस कार्य की पहल शुरू कर दी है। इस संबंध में हम देश विरोधी ताकतों तथा परिस्थितियों का लाभ उठाने वाले ब्लैकमेलर लोगों की भी लगातार जन जागृति के माध्यम से पोल खोलते रहेंगे। हम

समाज का मार्गदर्शन लगातार करते रहेंगे। अब हम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नहीं बल्कि सामाजिक नेतृत्व खड़ा करेंगे जो नरेंद्र मोदी को साथ लेकर समाज की समस्याओं का समाधान कर सके।

२. धर्मनिरपेक्ष संहिता की घोषणा स्वागतयोग्य :

15 अगस्त को लाल किले से नरेंद्र मोदी ने यह घोषणा की कि भारत में धर्मनिरपेक्ष संहिता लागू की जाएगी। इस घोषणा से कम्युनिस्ट, सांप्रदायिक मुसलमान और राहुल गांधी की रात की नींद उड़ गई है क्योंकि जिस धर्मनिरपेक्षता के नाम पर ये तीनों मिलकर समाज को भड़काया करते थे वह धर्मनिरपेक्षता नरेंद्र मोदी जी ने अपने पास ले ली है। अब इन तीनों को ऐसा दिख रहा है कि हम तो पूरी तरह कंगाल हो जाएंगे क्योंकि यही धर्मनिरपेक्षता एक आधार था जिसके आधार पर यह तीनों देश को भड़काया करते थे। मेरे विचार से नरेंद्र मोदी ने यह पहल करके बहुत अच्छा किया है। अब ये तीनों समान नागरिक संहिता का विरोध तो करेंगे लेकिन उनके पास कोई तर्क नहीं रहेंगे। इन तीनों को यह उम्मीद थी कि धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिंदू भड़क जाएगा लेकिन नरेंद्र मोदी ने जब से घोषित किया है, तब से गिने-चुने कट्टरपंथियों को छोड़कर देश के अन्य सब लोगों ने नरेंद्र मोदी की घोषणा का स्वागत किया है। भारत धर्मनिरपेक्ष संहिता चाहता है और नरेंद्र मोदी ने घोषणा करके अच्छा काम किया है। अब नेहरू परिवार गठबंधन को इस विषय में नए सिरे से विचार करना होगा।

३ राहुल गाँधी के तीन प्रयोग :

राहुल गांधी अपने जीवन के प्रारंभिक चरण में चल रहे हैं। वह नए-नए प्रयोग कर रहे हैं। वे इस बात को समझ रहे हैं कि उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं है और बनाने के लिए बहुत कुछ है, इसके लिए उन्होंने तीन प्रयोग किये। पहला प्रयोग यह था कि किसी एक झूठ को बहुत लंबे समय तक बार-बार बोला जाए, तो वह सच बन जाएगा। राहुल और मोदी में यह फर्क है कि राहुल किसी झूठ को बहुत लंबे समय तक बार-बार बोल सकते हैं। नरेंद्र मोदी सच को भी बार-बार नहीं बोल पाते हैं, इसलिए राहुल गांधी लगातार आक्रामक रहते हैं। दूसरी बात कि राहुल गांधी ने राजनीतिक दृष्टि से एक जुआ खेला है, राहुल गांधी ने कट्टरवादी

मुसलमान और कम्युनिस्टों को साथ लेकर अपनी राजनीतिक यात्रा आगे बढ़ाई है। इस तरह राहुल गांधी को वर्तमान चुनाव में आंशिक सफलता भी मिली है। तीसरी बात यह है कि राहुल गांधी ने आर्थिक मामलों में जॉर्ज सोरेस और हिडनवर्ग को साथ लेकर अडानी अंबानी पर आक्रमण करने शुरू किया। इन तीनों दिशाओं में राहुल गांधी लगातार तेजी से बढ़ते रहे। यदि हम राजनीतिक सफर की बात करें तो अल्पकालिक लाभ भले ही हुआ है लेकिन विश्वव्यापी दीर्घकालिक नुकसान की संभावना है। क्योंकि यूक्रेन में रूस की पोल खुल गई है और इजरायल ने मुसलमान की पोल खोल कर रख दी है। लंबे समय तक इन दोनों के साथ के कारण राहुल का राजनीतिक भविष्य खतरे में है। आर्थिक मामलों में पहले जॉर्ज सोरस और हिडनवर्ग को लेकर राहुल गांधी ने सफलतापूर्वक शेयर बाजार को गिराया था, लेकिन ऐसा लगता है कि इस बार दांव उल्टा पड़ गया। जिस हिडनवर्ग की रिपोर्ट के आधार पर राहुल बहुत उछल रहे थे, उस रिपोर्ट के बाद भी सेंसेक्स पर कोई प्रभाव का ना पड़ना राहुल गांधी को बहुत निराश कर रहा है। मैं यह समझता हूँ कि तीनों मामलों में राहुल गांधी की प्रगति दीर्घकालिक नहीं है, फिर भी राहुल अपने मार्ग पर लगातार बढ़ रहे हैं।

४ मूर्खतापूर्ण राजनीति :

हमारे भारत के एक मूर्ख नेता ने यह प्रश्न किया है कि भारत में जो सौंदर्य प्रतियोगिता होती है, उसमें आज तक किसी दलित महिला का चयन क्यों नहीं किया गया? मैं सोच रहा था कि इस प्रकार के प्रश्न करने वाले को मूर्ख कहूँ या धूर्त कहूँ। सच बात यह है कि भारतीय समाज व्यवस्था में महिलाओं की कोई जाति नहीं मानी जाती थी। फिर भी यदि आप मानते ही हो तो सबसे पहले उस मूर्ख को यह उत्तर देना चाहिए कि उसके परिवार की चार-पांच पीढ़ियों में आने वाली महिलाओं में कितनी दलित रही है। कहीं ऐसी बात तो नहीं कि उस मूर्ख का किसी दलित महिला से कोई गुप्त संबंध बन गया हो या इस दलित शब्द के मोह से उसका क्या तात्पर्य है। क्या अब सौंदर्य प्रतियोगिताओं में भी जातियां देखी जाएगी? उस मूर्ख से कई बार यह प्रश्न हुआ कि तुम्हारी जाति क्या है? तो वह तो अपने को जाति विहीन कहता है और वह मानता है कि वह कम्युनिस्ट है। कम्युनिस्ट की कोई जाति नहीं होती, लेकिन वह मूर्ख अपने को छोड़कर बाकी सब लोगों की जाति पूछ रहा है कि हमारे देश की सुंदर महिलाओं में से

किसकी कौन-कौन सी जातियां हैं। मुझे लगता है कि वह मूर्ख या तो पागल हो गया है या किसी षड्यंत्र के अंतर्गत इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है। वर्तमान भारत में जाति खोजने की जरूरत नहीं है। वर्तमान भारत में खोजना है तो गुण खोजो, योग्यता खोजो, जाति नहीं। हम सारी दुनिया से कंपटीशन कर रहे हैं, इस कंपटीशन में जाति कोई काम नहीं आएगी।

मैं बहुत समय से चुपचाप देख रहा था कि यह मूर्ख प्रभावहीन है लेकिन पिछले लगभग 1 वर्ष से मैंने यह अनुभव किया कि दुनिया की भारत विरोधी ताकतें इस मुर्ख को लालच देकर इसका उपयोग कर रही है। सोरोस और हिडन वर्ग ने इसका कितना उपयोग किया यह दुनिया देख चुकी है। चीन ने थोड़ा-सा मुट्ठी भर पैसा देकर इसका कितना उपयोग किया, यह बात भी जग जाहिर है। इसने भारत में रहकर किस तरह भारत सरकार को चीन के साथ लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे वह चीन के साथ और ज्यादा अच्छी आर्थिक सौदेबाजी कर सके, यह भी हम लोगों ने बहुत बार देखा है। लेकिन भारत सरकार ने बहुत बुद्धिमानी से काम लिया और अनावश्यक चीन से टकराव नहीं लिया। इस मूर्ख को आंख बंद करके कम्युनिस्टों का भी समर्थन मिल रहा है और पूंजीपत्तियों का भी। भारत के उद्योगपतियों को किसी तरह बदनाम कर दिया जाए, जिससे चीन अपने सामान को भारत भेज सके, यह मूर्खता भी इसने वर्षो से की है। मैं इस बात को देख-देख कर हैरान हूँ कि इस व्यक्ति की मूर्खता केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं है केवल राजनीतिक स्तर तक सीमित नहीं है बल्कि पूरे देश की एकता-अखंडता के लिए खतरनाक हो सकती है। इसलिए अब वर्तमान घटनाएं हम आप सबके लिए चिंता का विषय बन गई है।

4 जून के बाद भारत एक संकट के दौर से गुजर रहा है। जब से राहुल गांधी एंड कंपनी की ताकत बढ़ी है तब से खतरा और बढ़ गया है। कुछ दिनों पहले ही राहुल गांधी ने यह कहकर सनसनी फैला दी थी कि उन्हें सरकारी सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि राहुल गांधी की जल्दी ही गिरफ्तारी हो सकती है। आश्चर्य है कि हमारे भारत सरकार के खुफिया विभाग के माध्यम से राहुल गांधी को इतनी गुप्त जानकारी प्राप्त हुई, यह तो बहुत ही खतरनाक बात है। इसके पहले अरविंद केजरीवाल भी यह बात समाज को बता चुके हैं। उन्हें सरकारी सूत्रों से यह जानकारी मिली है कि उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा। वह गिरफ्तार भी हुए, यह बात भी सच है। इसका अर्थ यह है कि अरविंद केजरीवाल को भी हमारे सरकारी सूत्रों से गुप्त जानकारियां

मिलती रही है। ऐसा दावा मनीष सिसोदिया ने भी किया था और उनकी भी गिरफ्तारी हुई थी। यदि हमारे देश के विपक्ष के इतने बड़े-बड़े नेताओं को इस प्रकार की सारी गुप्त जानकारियां प्राप्त हो जा रही है, तो यह एक बहुत चिंता की बात है। यह तो अच्छा हुआ कि राहुल गांधी ने यह गुप्त बात सामने बता दी और हम आप सबको पता चल गया कि राहुल गांधी की गिरफ्तारी की योजना बन रही है। मैं इस प्रकार की बातों से बहुत चिंतित हूँ कि जब राहुल, अरविंद, मनीष सिसोदिया जैसे साधारण लोगों को इस बात की गुप्त जानकारी हो जाती है, तो देश के जो आतंकवादी हैं, उन लोगों से इस तरह की जानकारियां कैसे छिपती होगी। सरकार को इस बात की जांच करनी चाहिए कि उनके भीतर ही इस प्रकार के कौन लोग हैं, जो इतनी गुप्त जानकारियां दूसरों तक पहुंचा रहे हैं। मैं जानता हूँ कि भारत के सरकारी विभागों में भी बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट, कट्टरपंथी मुसलमान और बिकाऊ लोग भी है। यदि इस प्रकार के लोग ऐसी भी खतरनाक गतिविधियों में संलग्न है तो इनको खोज कर निकालने की जरूरत है। मैं राहुल, अरविंद से भी यह निवेदन करता हूँ कि वह इस प्रकार गुप्त जानकारियां देने वालों की जानकारी गुप्त रूप से सरकार को बता दें, जिससे देश खतरे में ना पड़े।

५ नरेन्द्र मोदी और नेहरु परिवार मिलकर साम्प्रदायिकता का समाधान निकाले :

मैंने अपने जीवन के 85 वर्षों में वह कार्यकाल भी देखा है, जब कम्युनिस्ट, नेहरू और मुसलमान मिलकर सरकार चला रहे थे। उस समय मुसलमान का मनोबल बहुत ऊंचा था, उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त थे। हर छोटी-छोटी बात पर मुसलमान की भावनाएं भड़क जाती थी। कश्मीर में मोहम्मद साहब का एक बाल चोरी हो गया, सारे देश में दंगे हो गए। वर्मा में रोहिंग्या मुसलमान पर अत्याचार हो गया, तो देश भर में दंगे शुरू हो गए। बात-बात पर मुसलमान की भावनाएं भड़क जाया करती थी। वे लोग दंगे करते थे, आग लगाते थे, हिंदुओं को मारते थे, हिंदू अपने घरों में घुस जाते थे। उसके बाद फिर सेना आती थी और कुछ मुसलमानों को मारती थी। यह मैंने कई बार देखा है कि हमेशा दंगों की शुरुआत मुसलमान ही करते थे और अंत में मुसलमान को नुकसान भी होता था। हिंदू कभी मुकाबला नहीं करता था, धीरे-धीरे मुसलमान सांप्रदायिकता के साथ-साथ गुंडागर्दी पर उतरने लगे। वह आम लोगों पर अत्याचार करने लगे। दूसरी ओर हिंदुओं में भी धीरे-धीरे एकजुटता, आई जिसका नेतृत्व संघ

ने किया। इस तरह हिंदुओं का मनोबल बढ़ना शुरू हुआ और परिणामस्वरूप देश में नरेंद्र मोदी की सरकार आई। आज हम लोगों ने देखा कि राजस्थान के उदयपुर में हिंदुओं ने आक्रामक रुख अपनाया। नासिक में भी हिंदुओं ने ही आक्रामकता दिखाई और पहल की। पहले बात-बात में मुसलमान की भावनाएं भड़क जाया करती थी और हिंदू दब जाते थे। अब धीरे-धीरे हिंदुओं की भावनाएं भड़क रही हैं और मुसलमानों को बराबरी की टक्कर मिल रही है। हम इसे मुस्लिम आक्रामकता का परिणाम मानते हैं और ऐसा होना स्वाभाविक भी है। अभी भी पूरे भारत में मुसलमान, कम्युनिस्ट और नेहरू परिवार को मिलाकर भी, हिंदुओं का मनोबल बराबर नहीं हुआ है। फिर भी इस प्रकार का टकराव परिस्थितिजन्य होते हुए भी कोई अच्छा समाधान नहीं है। अच्छा हो कि नरेंद्र मोदी सरकार मुसलमान के बढ़े हुए मनोबल का समाधान खोजे और नेहरू परिवार इस मामले में नरेंद्र मोदी का साथ दे। सांप्रदायिकता का समाधान हिंदुत्व से तो हो सकता है, लेकिन इस्लाम से नहीं हो सकता। यदि इस सांप्रदायिकता का समाधान नरेंद्र मोदी और नेहरू परिवार ने मिलजुल कर नहीं निकाला, तो देश में सांप्रदायिक हिंसा का खतरा बढ़ सकता है।

६ प्रताड़ित हिन्दुयों को नागरिकता देने पर राहुल को आपत्ति क्यों :

मैंने लिखा कि किस प्रकार पंडित नेहरू ने भारत में सांप्रदायिकता फैलाई, अन्यथा भारत धर्मनिरपेक्ष बन गया होता। कल से आज तक ना राहुल गांधी ने न राहुल गांधी के किसी भक्त ने मेरी इस बात का उत्तर दिया। मैं इन भक्तों से यह जानना चाहता हूँ कि जिन देशों में मुस्लिम शरिया लागू है, उन देशों के हिंदुओं को यदि भारत में आने पर शरण दे दी जाए, तो इसमें राहुल गांधी और मुसलमान यह शर्त जोड़ना चाहते हैं कि "उन पीड़ित हिंदुओं के साथ-साथ पीड़ा दे रहे मुसलमान को भी भारत आने दिया जाए"। मैं आज तक नहीं समझा कि इस प्रकार की शर्त का औचित्य क्या है? एक प्रताड़ना से बचकर भागने वाला अगर भारत में शरण लेना चाहता है, तब उसके साथ-साथ उसको पीड़ा देने वाला भी भारत आ सकता है, "ऐसी शर्त क्यों?" आज तक दुनिया में मैंने ऐसी शर्त कहीं नहीं सुनी है जैसी राहुल गांधी अपने मुस्लिम मित्रों के साथ मिलकर लगा रहे हैं। मैं फिर चाहता हूँ कि राहुल गांधी या उनके भक्त इस बात का उत्तर दें, कि भारत में शरिया से बच कर आने वाले हिंदुओं के साथ-साथ शरिया

के समर्थक मुसलमान को भी आने की शर्त का क्या औचित्य है? अब भारत धर्मनिरपेक्ष ही रहेगा 'भारत शरिया से नहीं संविधान से चलेगा' और यदि कहीं संविधान में कोई दिक्कत होगी, तो संविधान का संवैधानिक तरीके से संशोधन भी किया जाएगा। चाहे नरेंद्र मोदी सहमत हो या ना हो, चाहे राहुल गांधी सहमत हो या ना हो। नरेंद्र मोदी अपनी राजनैतिक सत्ता के लिए राहुल गांधी और मुसलमान से ब्लैकमेल हो सकते हैं, लेकिन भारत की जनता लंबे समय तक राजनेताओं से ब्लैकमेल नहीं होगी। यदि जरूरत पड़ेगी तो हम सब लोग मिलकर इसकी पहल करेंगे।

७ 'अवैध घुसपैठ' एक और विभाजन की साजिश तो नहीं :

भारत के मुसलमानों के एक बड़े राजनीतिक नेता ओवैसी ने यह कहा है, कि यदि भारत से विदेशी मुसलमान को बाहर निकाला गया, तो भारत से 6 करोड़ लोगों को निकालना पड़ेगा। इसका अर्थ हुआ कि ओवैसी के अनुसार भारत में 6 करोड़ के करीब पाकिस्तान या बांग्लादेशी मुसलमान रहते हैं। प्रश्न यह खड़ा होता है कि यह 6 करोड़ मुसलमान आए कैसे? यह बात साफ है कि स्वतंत्रता के बाद 70 वर्षों तक भारत में नेहरू परिवार का शासन रहा। नेहरू परिवार ने मुसलमान को विशेष अधिकार दिए। जबकि पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति खराब होती गई और भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत होती गई। भारत में लोकतंत्र था, पाकिस्तान हमेशा अस्थिर रहा और नेहरू जी हमेशा मुसलमान की तरफ झुके रहे। इन सब अनुकूल बातों को देखते हुए पाकिस्तान के मुसलमानों को यह ठीक लगा कि हम भारत में चले जाएं। भारत में धीरे-धीरे बहुमत बना लें और फिर से भारत में एक नए पाकिस्तान की मांग करने लग जाएं। विदेशी मुसलमानों को यह आभास ही नहीं था कि नरेंद्र मोदी की सरकार आ जाएगी। अब जब से नरेंद्र मोदी आए हैं, तब से विदेशी मुसलमानों पर अगर जरा भी कोई प्रतिबंध लग रहा है, तो भारत का मुसलमान तो कम चिल्लाता है और नेहरू परिवार अर्थात राहुल गांधी और उनके परिवार के लोग बहुत ज्यादा चिल्लाते हैं। विदेशी मुसलमानों को भारत आने से ना रोका जाए, इसकी राहुल गांधी को बहुत चिंता है और विदेशी हिंदुओं को भारत में न आने दिया जाए यह योजना भी राहुल गांधी हमेशा अपने दिमाग में रखते हैं। क्योंकि राहुल गांधी को वोट बैंक की भी चिंता है और मुस्लिम भाईचारा की भी चिंता है।

आज ओवैसी जिस तरह की बात कर रहे हैं, वह नेहरू परिवार की हिम्मत पर ही इतना बोल पा रहे हैं। राहुल गांधी को यह बात क्यों नहीं सोचनी चाहिए कि पंडित नेहरू ने पाकिस्तान और बांग्लादेशी मुसलमान को भारत में आमंत्रित करके गलती की थी। अब यदि विदेशी मुसलमानों को भारत आने से रोका जा रहा है, तो यह देश के लिए बहुत अच्छा है। लेकिन आश्चर्य है कि राहुल गांधी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष भारत में खुलकर यह बेशर्मी की बात कर रहे हैं कि मुसलमानों को भारत आने से ना रोका जाए।

८ स्थानीय और वैश्विक स्तर पर शत्रु एवं विरोधी की पहचान :

हम सामाजिक विषयों पर चर्चा के अंतर्गत शत्रु और विरोधी का अंतर खोज रहे थे। शत्रु वह होता है जो हमारे विरुद्ध षड्यंत्र कर सकता है, झूठ बोल सकता है, धोखा दे सकता है। विरोधी आमतौर पर सामने से वार करता है, शत्रु पीछे से वार करता है। हमने यह भी पाया था कि साम्यवाद सारी दुनिया के लिए विचारधारा के रूप में शत्रु के समान है। हमें किसी भी परिस्थिति में साम्यवादी विचारधारा को शत्रु ही मानना चाहिए, लेकिन यदि हम लोग राष्ट्रीय स्तर पर विचार करें और भारत की समीक्षा करें तो भारत में विचारधारा के रूप में साम्यवाद कमजोर होता जा रहा है। संगठन के रूप में इस्लाम मजबूत हो रहा है, क्योंकि इस्लाम को साम्यवाद का भी समर्थन मिल रहा है और नेहरू परिवार का भी सहयोग मिल रहा है। इन दोनों की मदद से इस्लाम मजबूत हो रहा है, इस्लाम राष्ट्रीय स्तर पर तो हमारा शत्रु है लेकिन विश्व स्तर पर हमारा शत्रु नहीं है, विरोधी मात्र है। स्पष्ट है कि यदि विश्व स्तरीय चर्चा होगी, तो हम साम्यवाद के विरुद्ध इस्लाम को अपने साथ जोड़ सकते हैं, लेकिन यदि स्थानीय स्तर पर चर्चा होगी, तो हम इस्लाम को शत्रु मानेंगे। इसलिए मेरा यह सुझाव है कि भारत में इस्लाम को अपना पहला शत्रु मानते हुए सब लोगों को एकजुट करने की जरूरत है। भारत का जो भी नागरिक साम्यवाद, इस्लाम और नेहरू परिवार के गठजोड़ के विरुद्ध हो चाहे वह इसाई हो मुसलमान हो या कोई भी अन्य, सबको एक साथ जोड़ लेना चाहिए। वर्तमान स्थिति आपातकाल के अनुसार है। वर्तमान समय में सबको एकजुट करने की जरूरत है। कौन संगठित मुसलमान है और कौन धार्मिक मुसलमान है, इसकी एक साफ पहचान बनी हुई है, एक लिटमस टेस्ट बना हुआ है। जो व्यक्ति समान नागरिक संहिता का समर्थन करता है, वह

हमारे साथ रह सकता है। जो समान नागरिक संहिता का समर्थन नहीं करता, उससे हम सावधान रहेंगे। जो समान नागरिक संहिता का विरोध करता है, उस मुसलमान को हम शत्रु मानेंगे। कम्युनिस्ट तो शत्रु होते ही है और नेहरू परिवार भी उनके साथ है। यदि कोई कांग्रेसी या कम्युनिस्ट भी समान नागरिक संहिता का समर्थन करें, तो हमें सावधानी पूर्वक उसे अपने साथ मान लेना चाहिए। वर्तमान खतरनाक परिस्थितियों में धर्मनिरपेक्ष नागरिक संहिता के पक्ष में प्रत्येक व्यक्ति को एकजुट करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। चाहे व्यक्ति किसी विचारधारा का हो, किसी भी आचरण का हो, किसी भी राजनीतिक दल का हो।

९ राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था की हो शुरुआत :

वैसे तो हमारे समक्ष अनेक समस्याएं हैं लेकिन वर्तमान समय में हम जिन समस्याओं से जूझ रहे हैं, उनमें दो प्रमुख हैं एक है 'सांप्रदायिकता' और दूसरी है 'बढ़ती राजनीतिक सक्रियता'। इन दो समस्याओं का समाधान हमें प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए। सांप्रदायिकता हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा है और सत्ता का केंद्रीकरण हमारे समाज के समक्ष बहुत बड़ा खतरा है। इन दोनों समस्याओं के समाधान के लिए हमें दो दिशाओं में काम करना चाहिए। पहली है 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र व्यवस्था' और दूसरी है 'राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था'। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र व्यवस्था के लिए अभी 15 अगस्त को नरेंद्र मोदी ने महत्वपूर्ण पहल की है। पूरा देश उनके इस पहल से संतुष्ट है, लेकिन राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था की अभी तक कोई शुरुआत नहीं हुई है। नरेंद्र मोदी से ऐसी उम्मीद भी नहीं की जा सकती है क्योंकि पूरे देश की राजनीतिक व्यवस्था जो स्वतंत्रता से लेकर अब तक चली आ रही है, उसको कोई सरकार ना बदलना चाहेगी, ना बदल सकेगी। यह कार्य तो समाज को ही करना होगा। अब समाज के लोगों को आगे आकर राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था की शुरुआत करनी चाहिए। कहीं-कहीं छोटे-छोटे समूह इस दिशा में काम भी कर रहे हैं। अशोक भाई पटेल, रामवीर श्रेष्ठ यह लोग मिलकर दलविहीन लोकतंत्र की मांग लगातार उठा रहे हैं। अर्पित अनाम जी अंबाला से राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था की मांग उठा रहे हैं। यह सब बहुत अच्छी बात है। इस संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर मिलजुल कर पहल करने की जरूरत है। राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था के लिए निरंतर जन जागरण किया जाना चाहिए।

१० व्यवस्था परिवर्तन के लिए जन जागरण :

भारत की वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था से अब समाज को सुव्यवस्था की कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। यह लोकतांत्रिक व्यवस्था अराजकता की दिशा में बढ़ रही है, जिसे पूरी ईमानदारी से रोकने का प्रयास नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत, अमित शाह और योगी आदित्यनाथ की टीम कर रही है। इस अराजकता का लाभ उठाने के लिए कम्युनिस्ट, सांप्रदायिक मुसलमान और नेहरू परिवार पूरे जी जान से लगे हुए हैं। यह बात साफ दिख रही है कि समाधान करने वाले कमजोर पड़ रहे हैं। ऐसी स्थिति में अब समाज को इन समस्याओं के समाधान के बारे में राजनीतिक व्यवस्था परिवर्तन पर गंभीरता से सोचना चाहिए। इस दिशा में 4 जून के बाद गंभीरता से विचार करके हम लोगों ने कुछ पहल की है। बहुत लोगों ने जानना चाहा है कि हम लोगों की योजना क्या है और पहल का क्या है? इस संबंध में मैं आपको यह स्पष्ट कर दूँ कि हम लोगों की शक्ति बहुत सीमित है, सीमित शक्ति में ही हम लोग कुछ शुरुआत कर रहे हैं। पहला प्रयत्न हम लोगों का यह है, कि वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था में तंत्र ने संविधान को गुलाम बना लिया है। हम इसके लिए जन जागरण करें कि संविधान संशोधन के लिए तंत्र मुक्त कोई एक अलग व्यवस्था होनी चाहिए। हमारा दूसरा प्रयत्न यह है, कि हम आम लोगों को समझाएं कि समाज और राज्य अलग-अलग होते हैं, जिसमें राज्य समाज का मैनेजर होता है, कस्टोडियन नहीं। इसके लिए हम लोग प्रतिदिन रात को विचार मंथन कार्यक्रम 1 घंटे का आयोजित करते हैं, जो धीरे-धीरे सक्रिय हो रहा है। हम तीसरा काम यह कर रहे हैं, कि वर्तमान राजनीतिक संवैधानिक व्यवस्था को ब्लैकमेल करके उसका दुरुपयोग करने में सक्रिय लोगों के प्रति भी हम समाज को जागरुक कर रहे हैं। इस ब्लैकमेलिंग में महिला, बेरोजगार, महंगाई, न्यायपालिका सहित अनेक संगठित इकाइयां सक्रिय है, जो इस अराजक वातावरण में लाभ उठाना चाहती हैं।

इसके लिए हमें दो तरह की योजनाएं एक साथ क्रियान्वित करनी है एक दीर्घकालिक, दूसरा अल्पकालीन। दीर्घकालिक योजना के अंतर्गत तो हम 'तंत्र मुक्त संविधान युक्त समाज व्यवस्था' के लिए जन जागरण करते रहेंगे। तात्कालिक योजना के अंतर्गत हम धर्मनिरपेक्ष कानून व्यवस्था तथा राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था को आधार बनाकर जन

जागरण करेंगे। यह दोनों कार्य एक साथ करेंगे। हमारी टीम ने दोनों दिशाओं में एक साथ काम शुरू भी कर दिया है। तंत्र मुक्त संविधान व्यवस्था के लिए, तो हम न नरेंद्र मोदी सरकार से कोई उम्मीद कर सकते हैं, ना ही न्यायपालिका से। न्यायपालिका तो स्वयं तानाशाह बनने की दिशा में सक्रिय है। कोई भी अन्य राजनीतिक व्यक्ति या इकाई इस महत्वपूर्ण कार्य में बाधक ही बनेंगे सहायक नहीं। इसलिए इस कार्य के लिए तो जन जागरण ही अकेला मार्ग है। राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था के लिए आंशिक रूप से संघ परिवार, गांधी संस्थाएं, गायत्री परिवार, आर्य समाज के लोग आसानी से समझ सकते हैं। कुछ अन्य लोगों को भी समझ में आ सकता है। लेकिन धर्मनिरपेक्ष कानून व्यवस्था के लिए हमारी एकमात्र निर्भरता नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत, अमित शाह और योगी आदित्यनाथ की मिली-जुली सक्रियता से ही जुड़ी है। यह चार लोग मिलकर इस संबंध में जो भी कदम उठाएंगे, उसका हम मुक्त कंठ समर्थन करेंगे। इसके साथ-साथ अतिरिक्त रूप से हम साम्यवाद और साम्यवादियों को शत्रु मानकर, उनसे पूरी तरह दूरी बनाकर रखेंगे। मुसलमान के मामले में जो मुसलमान धर्मनिरपेक्ष कानून व्यवस्था का खुलकर विरोध करेंगे, उन्हें छोड़कर अन्य मुसलमान से हम सावधानी पूर्वक सामान्य संबंध बनाए रखेंगे। सभी मुसलमान खराब हैं, इस सावरकरवादी धारणा को हम अमान्य करते हैं। विपक्ष से संबंधों के मामले में सोनिया, नेहरू परिवार को छोड़कर हम अन्य किसी विपक्षी नेता का विरोध नहीं करेंगे। विपक्ष के भ्रष्ट नेताओं से भी हमें कोई परहेज नहीं है। नेहरू परिवार से हटकर कोई कांग्रेसी भी हमारा मित्र हो सकता है। राजनीतिक मामलों में हम साम्यवाद सांप्रदायिक मुसलमान और नेहरू परिवार की मिली-जुली ताकत के विरुद्ध पूरे समाज को एकजुट करने की कोशिश कर रहे हैं।

११ परिस्थितियों के आधार पर बनी रणनीति :

मैने तीन-चार प्रमुख बातें लिखी थी। एक हमें अब भारतीय जनता पार्टी से शून्य और नरेंद्र मोदी से सीमित ही उम्मीद करनी चाहिए। अब इन मजबूर इकाइयों से व्यवस्था परिवर्तन संभव नहीं दिखता है। दूसरी बात कि हम नरेंद्र मोदी से मात्र इतनी ही उम्मीद करें, कि वह धर्म के आधार पर हिंदू राष्ट्र, मुस्लिम राष्ट्र के विपरीत धर्मनिरपेक्ष कानून व्यवस्था की दिशा में आगे बढ़े। हमने तीसरी बात यह लिखी थी कि अब समाज को राजनीति निरपेक्ष दिशा में

सोचने पर विचार करना चाहिए। चौथी बात मैंने यह लिखी थी कि साम्यवाद और मुस्लिम सांप्रदायिकता नेहरू परिवार के साथ जुड़कर खतरनाक दिशा में सक्रिय हो रही है। हमें अपना विरोध साम्यवादी विचारधारा, सांप्रदायिक मुसलमान और नेहरू परिवार तक सीमित कर लेना चाहिए। अन्य जो भी राजनीतिक दल हैं उनके साथ हमें किसी प्रकार का विरोध प्रकट नहीं करना चाहिए। मेरे एक मित्र आचार्य धर्मेंद्र जो बक्सर के रहने वाले हैं, वह बड़े अच्छे मित्र और सलाहकार हैं। वह आचार्य कुल के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी है। उन्होंने मुझे लिखकर भी और फोन पर भी बताया कि मैंने जो लिखा है वह गलत है। मैंने उनसे जानना चाहा कि आप बताइए कि इसमें कौन सी बात सही नहीं है तो उन्होंने कहा कि यह सब बाद में चर्चा होगी। मैं अभी तक नहीं समझ सका कि मैंने जो चार बातें लिखी हैं, इनमें से कौन सी ऐसी बात है, जो आचार्य कुल अथवा गांधीवादियों को ठीक नहीं लगती है। मैं भी गांधी-विनोबा जी को मानने वाला हूँ, मैं भी आचार्य कुल के साथ जुड़ा हुआ हूँ। यदि कोई बात किसी भी रूप में गांधी और बिनोवा के विचारों के विपरीत होगी, तो मैं उस विषय पर सोचने के लिए तैयार हूँ लेकिन मेरा यह निवेदन है कि मेरे इस गंभीर लेख को गलत कह कर किनारे करना हमारे मित्रों के लिए उचित नहीं है। मैं जानता हूँ कि मैंने जो आज लिखा है, उसमें पिछले सात आठ महीनों की लेखनी और भाषा में एक बड़ा बदलाव है, किंतु क्या परिस्थितियों के अनुसार बदलाव करना हमारे आचार्य कुल या आचार्य धर्मेंद्र भाई को ठीक नहीं प्रतीत होता है। मैं अपने अन्य मित्रों से भी जानना चाहता हूँ कि वे इस विषय पर खुलकर मुझे सलाह दें।

१२ संविधान एवं देश विरोधी गतिविधियों का हो प्रबल विरोध :

पहली बात यह है कि तंत्र मुक्त संविधान बनाना, बिना संविधान संशोधन के संभव नहीं है और संविधान संशोधन समाज विरोधी ताकतें होने ही नहीं देंगी। हम लोगों से यह भूल हुई कि हम लोगों ने नरेंद्र मोदी को मजबूत करने में अपनी सारी ताकत लगा दी। सच बात यह है कि नरेंद्र मोदी से कहीं गलती नहीं हुई है, गलती हुई है तो हम लोगों से हुई कि हम लोगों ने हिंदू-मुस्लिम एकीकरण को ही अंतिम समाधान मान लिया। यदि नरेंद्र मोदी को मजबूत करने की अपेक्षा हम देश विरोधी शक्तियों को कमजोर करने का प्रयत्न करते तो आज परिणाम अलग होता। यह बात लंबे समय से साफ दिख रही थी कि कम्युनिस्ट, कट्टरपंथी मुसलमान

और नेहरू परिवार पूरी तरह संविधान विरोधी, देश विरोधी, समाज विरोधी गतिविधियों को जोड़कर सत्ता प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन हम लोगों ने उस खतरे को महत्व न देकर नरेंद्र मोदी और हिंदुओं के एकत्रीकरण पर सारी ताकत लगा दी। लेकिन हम इसमें सफल नहीं हो सके। अब हम लोग इस गलती को सुधार लें। अब हम नरेंद्र मोदी को मजबूत नहीं करेंगे, अब हम हिंदू-मुस्लिम एकत्रीकरण नहीं करेंगे, अब हम देश विरोधी ताकतों को कमजोर करेंगे। जब तक नेहरू परिवार, कट्टरपंथी इस्लाम और साम्यवाद का गठजोड़ कमजोर नहीं हो जाता, तब तक ना हिंदुत्व सुरक्षित रहेगा, ना संविधान सुरक्षित रहेगा, ना लोकतंत्र सुरक्षित रहेगा, न देश सुरक्षित रहेगा। इसलिए अब हम लोगों को अपनी नीतियां बदलनी चाहिए। नरेंद्र मोदी क्या करते हैं, अपनी नीति बदलते हैं, नहीं बदलते हैं, वह मोदी जी जाने, लेकिन हम लोगों को तो अपनी नीति में बदलाव करना चाहिए। मैं आपको फिर से स्पष्ट कर दूं कि पिछले एक वर्ष से हुई गलतियों से हम आप सबको सबक लेना चाहिए। राहुल गांधी ने बड़ी दृढ़ता के साथ सारे चोरों को अपने साथ मिला लिया, सांप्रदायिक तत्वों को अपने साथ जोड़ लिया, कम्युनिस्ट को भी अपने साथ जोड़ लिया और हम लोग अरविंद केजरीवाल को भी गाली देते रहे, नीतीश कुमार का भी विरोध करते रहे, उद्धव ठाकरे का भी विरोध करते रहे। हम हर उस व्यक्ति का विरोध करते रहे जो हिंदुत्व का समर्थक नहीं है, जो ईमानदार और चरित्रवान नहीं है। दुर्भाग्य है कि राहुल गांधी ऐसे सारे गलत लोगों को अपने साथ जोड़ते चले गए और हम लोग इन सबको किनारे करते चले गए। हम लोगों को सभी अच्छे लोगों को एकजुट करने की कोशिश छोड़ देनी चाहिए। हमें सभी बुरे लोगों को किनारे करने की कोशिश करनी चाहिए। अब हम आंख बंद करके नरेंद्र मोदी के पीछे नहीं चलेंगे बल्कि हम आंख खोल कर साम्यवाद, मुस्लिम सांप्रदायिकता और नेहरू परिवार का विरोध करेंगे।

१३ क्या है राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था :

हमारे मित्र राकेश कुमार जी ने राजनीति निरपेक्ष समाज व्यवस्था क्यों क्या और कैसे विषय पर विस्तार से चर्चा की इच्छा व्यक्त की है। इस संबंध में सामाजिक चर्चा के अंतर्गत हम 5-7 दिन चर्चा करेंगे। एक सर्वमान्य सिद्धांत है कि जब समय बदलने के साथ-साथ हमारी सामाजिक मान्यताओं में बदलाव नहीं होता तो मान्यताएं रूढ़ होकर विकृत होने लगती हैं।

जिस तरह हमारे शरीर में फोड़ा फुंसी होते ही मक्खियाँ उसका लाभ उठाना शुरू कर देती है और धीरे-धीरे उसे घाव में बदल देती है। उसी तरह समाज व्यवस्था में भी असामाजिक तत्व इन विकृतियों को और अधिक उभार कर उसे सामाजिक समस्या का रूप दे देते हैं। प्राचीन समय की गुण-कर्म-स्वभाव आधारित वर्ण और जाति व्यवस्था ऐसी समस्याओं का स्वाभाविक समाधान थी। यह गुण कर्म स्वभाव आधारित वर्ण और जाति व्यवस्था जब रूढ़ और विकृत होकर जन्म आधारित हो गई, तब सबसे पहले बुद्ध ने इसका लाभ उठाने की कोशिश की और बाद में मुसलमान, ईसाई आदि इस विकृति को आधार बनाकर गुलाम बनाने में सफल हो गए। स्वामी दयानंद, विवेकानंद ,गांधी आदि ने इन बुराइयों को ठीक करने की कोशिश की और असामाजिक तत्वों के रूप में नेहरू, अंबेडकर, कम्युनिस्ट आदि ने इन बुराइयों का लाभ उठाने की कोशिश की। गांधी के मरने के बाद इन सब ने भारत की समाज व्यवस्था के साथ ऐसा विश्वासघात किया, कि राज्य व्यवस्था निरंतर मजबूत और समाज व्यवस्था लगातार कमजोर होती चली गई। नेहरू और अंबेडकर ही अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक बुराइयों को बढ़ाते रहे और दोनों ही प्रत्यक्ष रूप से इन बुराइयों के डॉक्टर बनकर इनका इलाज भी करते रहे। नेहरू पूरी तरह कम्युनिस्ट थे और अंबेडकर पश्चिम के अंध भक्त, दोनों ने मिलकर भारत पर एक ऐसा संविधान थोप दिया, जिसमें साम्यवाद, लोकतंत्र तथा इस्लाम की सभी कमजोरियों को समाधान के रूप में शामिल कर दी गई। हमारी भारतीय समाज व्यवस्था, परिवार व्यवस्था को सामाजिक बुराई सिद्ध करके, इसे बाहर निकाल दिया गया। परिणाम आज हमारे सामने स्पष्ट है कि राजनीतिक संवैधानिक व्यवस्था पूरी तरह हमारे हर धार्मिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक व्यवस्था को विस्थापित करके स्वयं को स्थापित करती जा रही है।

वैसे तो सारी दुनिया में जब से राजनीति का हस्तक्षेप समाज व्यवस्था में बढ़ा है, तब से समस्याएं कुछ ना कुछ बढ़ी ही है। हम भारत तक ही सीमित रहकर इस विषय को उदाहरण के रूप में आपके सामने प्रस्तुत करेंगे, क्योंकि हमने भारत में ही 75 वर्ष के राजनीतिक उतार चढ़ाव और उसके परिणामों को प्रत्यक्ष देखा है, समझा है। स्वतंत्रता के बाद भारत में भौतिक उन्नति बहुत तेज गति से हुई है, आम लोगों की सुविधा बढ़ी हैं, जीवन स्तर ऊंचा हुआ है, राष्ट्रीय संपत्ति से लेकर व्यक्तिगत संपत्ति तक में बहुत तेज उछाल आया है, यह बात सच है।

दूसरी ओर यदि हम गंभीरता से आकलन करें तो देश में उतनी ही तेज गति से नैतिक पतन भी हुआ है। भारत में स्वतंत्रता के बाद सच बोलने वालों की संख्या यदि 70% थी तो आज वह संख्या घटकर दो-चार प्रतिशत तक सिमट गई है। भारत में उस समय कर्तव्य करने के प्रति जितना जोर था, आज कर्तव्य की जगह अधिकारों की छीना झपटी बहुत तेजी से बढ़ी है। आम नागरिक के मन में हिंसा के प्रति विश्वास भी लगातार बढ़ता ही जा रहा है। उस समय गरीबी में भी संतुष्ट लोगों का प्रतिशत अधिक था, अब अमीरी में भी असंतुष्ट रहने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। परिवार व्यवस्था लगातार कमजोर होती जा रही है। उस समय धर्म संगठित नहीं था, धर्म के नाम पर हिंसा बहुत कम होती थी। वर्तमान समय में धर्म के नाम पर संगठन बनते जा रहे हैं। धर्म के नाम पर हिंसा भी बढ़ रही है। यदि हम गंभीरता से विचार करें तो अनेक मामलों में नैतिकता का स्तर लगातार गिर रहा है। समाज व्यवस्था और धर्म व्यवस्था में राजनीतिक हस्तक्षेप लगातार बढ़ता जा रहा है। अर्थव्यवस्था में भी स्वतंत्रता लगभग समाप्त हो गई है। कुल मिलाकर भौतिक उन्नति की तुलना में नैतिक पतन अधिक हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर स्वार्थ की मात्रा भी तेजी से बढ़ रही है, हम समृद्ध हुए हैं किंतु हमारा सुख घटता जा रहा है। इसलिए हम कह सकते हैं, कि स्वतंत्रता के बाद समाज व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था के बीच जो तुलनात्मक परिणाम निकले हैं, वह कुल मिलाकर हमारी असफलता सिद्ध करते हैं।

१४ नैतिक पतन का मूल कारण है 'राजनैतिक व्यवस्था' :

हम सामाजिक विषयों के अंतर्गत इस निष्कर्ष तक पहुंच चुके हैं कि भारत में भौतिक उन्नति बहुत तेज गति से होते हुए भी नैतिक पतन भी तेज गति से हुआ है। विचारणीय प्रश्न आज यह है कि भारत में जो नैतिक पतन दिख रहा है वह समाज की बुराइयों के कारण राजनीति में आया अथवा राजनीतिक बुराइयों के कारण समाज में आया। इन पर हमें लगातार गंभीरता से सोचना पड़ेगा। भारत में झूठ बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। मुझे बचपन के दिनों की याद है कि न्यायालय में गीता की कसम खाकर झूठ बोलने वालों की संख्या नगण्य थी, समाज में भी बहुत ही कम लोग झूठ बोलते थे। वर्तमान समय में न्यायालय में धर्म ग्रंथ या संविधान की कसम खाकर झूठ बोलने वालों की संख्या 100% है। समाज में

झूठ बोलने वालों की संख्या करीब 50% तक है। मैं स्वयं बचपन से लेकर आज तक न्यायालय में शायद ही कभी सच बोला हूँ। अन्यथा न्यायालय और पुलिस में झूठ बोलता ही हूँ, लेकिन समाज में मैं कभी झूठ नहीं बोलता, धर्म स्थान में भी झूठ नहीं बोलता। यहां तक कि यदि किसी पंचायत में भी मैं पंच या प्रमुख हूँ, तो वहां पूरी तरह न्याय करता हूँ। जरा भी पक्षपात नहीं करता, बाहर के मामलों में कभी-कभी कुछ पक्षपात हो जाता है। कानूनी या न्यायपालिका के मामलों में तो मेरे झूठ बोलने की न कोई सीमा है न पक्षपात करने की कोई सीमा है। स्वतंत्रता के बाद भारत की संसद में सच बोलने वालों की जो संख्या थी, चरित्रवान लोगों की जो संख्या थी, वर्तमान संसद में वह संख्या बहुत घट गई है। प्रश्न यह खड़ा होता है, कि जब राजनीति में झूठ बोलने वालों की संख्या शत प्रतिशत है और समाज में 50% धार्मिक कार्यों में और भी कम है, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं की राजनीति का दुष्प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। समाज का कोई प्रभाव राजनीति पर नहीं पड़ रहा है। अंत में निष्कर्ष यही निकलता है कि चरित्र पतन में राजनीति की भूमिका निर्णायक है। समाज राजनीति का शिकार है, शिकारी नहीं।

यह बात पूरी तरह प्रमाणित है, कि स्वतंत्रता के बाद समाज में नैतिक पतन बहुत तेज गति से हुआ। विचारणीय है कि समाज पर राजनैतिक पतन का प्रभाव पड़ा अथवा सामाजिक पतन का राजनीति पर प्रभाव पड़ा। मेरा यह मानना है कि समाज पर राजनीतिक पतन का प्रभाव पड़ा, समाज का राजनीति पर नहीं। इसी चर्चा की दूसरी कड़ी में आज हम यह चर्चा कर रहे हैं कि भ्रष्टाचार की मात्रा राजनीति से समाज में आई या समाज से राजनीति में गई। मैंने इस संबंध में रिसर्च किया तो यह साफ-साफ देखा कि राजनीति में भ्रष्टाचार लगभग 100% है। कोई एक भी व्यक्ति इतना विश्वसनीय नहीं है, कि जिसे हम गारंटी से ईमानदार कह सके। दूसरी ओर सामाजिक संस्थाओं में आज भी 20-25% लोग ही इमानदार मिल पाते हैं। धार्मिक संस्थाओं में ऐसे ईमानदार लोगों का प्रतिशत कुछ और भी ज्यादा होकर 30-40 तक चला जाता है। स्पष्ट है कि वर्तमान चरम पतन के कार्यकाल तक राजनीति में जितना ज्यादा भ्रष्टाचार है, उतना समाज व्यवस्था या धर्म व्यवस्था में नहीं है। यहां तक कि व्यापारियों में भी भ्रष्टाचार बढ़ा है, लेकिन वह भी 70-80% से ज्यादा नहीं है। जो व्यापारी सरकारी कार्यों में दो नंबर का व्यवहार करते हैं, वह आपस के जबानी लेनदेन में पूरी तरह ईमानदारी का व्यवहार करते हैं।

स्पष्ट है कि समाज की बुराई राजनीति में नहीं गई है, बल्कि राजनीति की बुराई समाज में आई है। स्वतंत्रता के समय जो संसद में गए थे, वह अधिकांश लोग इमानदार थे। आज उनका प्रतिशत ईमानदारों का तो लगभग शून्य है यहां तक कि अपराधी तत्वों का भी प्रतिशत 40-50 तक पहुंच गया है। जबकि संपूर्ण समाज व्यवस्था में आज भी अपराधियों का प्रतिशत दो के आसपास है। इसका अर्थ यह हुआ कि समाज में अभी भी 98% सामाजिक हैं और राजनीति में 40% अपराधी है। यह बात साफ हो गई है, कि राजनीतिक पतन पहले हुआ और सामाजिक बाद में।

१५ सामाजिक एकता में सबसे बड़ा बाधक 'साम्यवाद' :

हम अपने व्यक्तिगत जीवन में तीन बातों से अधिक प्रभावित होते हैं। कुछ धार्मिक मान्यताएं होती हैं, कुछ सामाजिक परिस्थितियों होती हैं और कुछ राष्ट्रीय मामले होते हैं और यह तीनों ही हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। यदि हम वर्तमान भारत का आकलन करें, तो हमारे देश को धार्मिक मामलों में इस्लाम से खतरा है। इसाईयत या अन्य धर्मावलंबियों से हमें किसी प्रकार के धार्मिक संकट की कोई बड़ी संभावना नहीं दिखती है। लेकिन इस्लाम अकेला ऐसा समूह है, जो संगठित है, हिंसक है, विदेश से संचालित है, इस्लाम सिर्फ और सिर्फ संख्या बल को महत्व देता है। भारत में भी इस्लाम लगातार अपनी आबादी बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है। यदि हम सामाजिक खतरों की ओर सोचें तो सिर्फ साम्यवाद ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है, जो सामाजिक एकता में हमेशा बाधक बनती है। साम्यवाद कभी यह नहीं चाहता कि समाज एकजुट हो। समाज को धर्म, जाति, भाषा, लिंग, गरीब-अमीर, युवा-वृद्ध अनेक प्रकार से विभाजित करके वर्ग-विद्वेष और वर्ग संघर्ष करना साम्यवाद का एकमात्र एजेंडा होता है। भारत में भी साम्यवाद लगातार इसी प्रयत्न में रहता है कि किसी भी परिस्थिति में सामाजिक एकता ना हो सके। इसलिए हम साम्यवाद को सबसे अधिक समाज के लिए घातक मानते हैं। भारत की राष्ट्रीय ताकत के सामने एकमात्र खतरा नेहरू परिवार है। नेहरू परिवार अपने राजनीतिक शक्ति बनाए रखने के लिए लगातार तरह-तरह के षड्यंत्र करता है। नेहरू परिवार खतरनाक विदेशी शक्तियों के साथ तालमेल करके लगातार कोशिश करता है कि वह किसी तरह भारत को गुलाम बनाकर रखें। जब से नेहरू परिवार राजनीतिक सत्ता से दूर हुआ

है, तब से नेहरू परिवार लगातार विदेशियों के साथ मिलकर षड्यंत्र कर रहा है। दुर्भाग्य से धर्म विरोधी, समाज विरोधी और राष्ट्र विरोधी ताकतें एकजुट हो रही हैं। इन तीनों के विरुद्ध देश के सब लोगों को एकजुट होना चाहिए, चाहे इस एकजुटता में हमें अरविंद केजरीवाल और अखिलेश यादव की भी मदद लेनी पड़े। यदि इस एक जुटता में हमें ईसाइयों या अन्य धर्मावलंबियों को भी साथ लेना पड़े, तो हमें हिचकिचाना नहीं चाहिए। अरविंद केजरीवाल या अखिलेश यादव राष्ट्र विरोधी, समाज विरोधी या धर्म विरोधी नहीं हो पाएंगे, भले ही वे अल्पकाल के लिए, इस प्रकार की गतिविधियों में संलग्न हो। मैं आपसे यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि वर्तमान समय में हम सब लोगों को सब प्रकार के भेदभाव भूल कर साम्यवाद कट्टरपंथी इस्लाम और नेहरू परिवार की एकजुटता का मुकाबला करना चाहिए।

१६ साम्प्रदायिकता के निवारण के लिए समवेत प्रयास की जरूरत :

भारत में पिछले दो दिनों में कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुई, जिससे हम लोग गंभीर चिंतन के लिए मजबूर हो गए। उत्तर प्रदेश के मुरादनगर में ट्रेन एक्सीडेंट करने के लिए रेल की पटरी उखाड़ी गई और इस आरोप में एक युवक को पकड़ा गया 'जो मुसलमान था'। अब तक यह पता नहीं चला है कि उस युवक का उद्देश्य सांप्रदायिक था, राजनीतिक था अथवा लूटपाट था लेकिन मुसलमान होने से संदेह गहरा हो जाता है। एक और घटना घटित हुई कि प्रयागराज में एक मदरसे में, जो मस्जिद के ही एक भाग में संचालित था, उस मदरसे के प्राचार्य और अन्य शिक्षक लोग नकली नोट बनाने के आरोप में पकड़े गए। इस आरोप में पकड़े गए सभी लोग उच्च शिक्षित मुसलमान है और उन्हें धर्मगुरु की पदवी प्राप्त है। यह दोनों घटनाएं इस बात को सिद्ध करती हैं, कि उत्तर प्रदेश में पिछले तीन-चार महीनों से जब से नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ का भय घटा है, उस समय से इस प्रकार के आपराधिक तत्वों का मनोबल बढ़ा है। स्पष्ट है कि सांप्रदायिकता और अपराध का फिर से एक नया संस्करण शुरू हो रहा है। एक अन्य घटनाक्रम में असम की विधानसभा में शुक्रवार को 2 घंटे तक नमाज के लिए, विधानसभा भवन का कार्य रोक देने की पुरानी परिपाटी को बंद करने का निर्णय किया गया है। इस निर्णय का देश भर के सांप्रदायिक मुसलमान और उनके राजनीतिक पिछलग्गू विरोध कर रहे हैं। एक अन्य घटनाक्रम में भारतीय जनता पार्टी ने अपने नए सदस्यता अभियान में देश भर

से 50 लाख मुसलमान को सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इतना बड़ा लक्ष्य पूरा होगा या नहीं होगा यह नहीं कहा जा सकता है किंतु यदि आधा अधूरा भी पूरा होता है, तो यह भारतीय जनता पार्टी का प्रयास सराहनीय माना जाना चाहिए। अवश्य ही वर्तमान राजनीतिक घटनाक्रम से भारतीय जनता पार्टी भी सतर्क है और अपनी नीतियों में बदलाव करने की सोच रही है। कुल मिलाकर मैं यहां अनुभव करता हूँ कि सांप्रदायिकता पर नियंत्रण के लिए सबको मिलजुल कर सोचना चाहिए चाहे वह मुसलमान हो या हिंदू, चाहे वह कांग्रेसी हो या बीजेपी वाले। सांप्रदायिकता हमेशा समाज के लिए दुधारी तलवार होती है। सांप्रदायिकता और अपराध का गठजोड़ पूरे देश के लिए भी घातक होगा और समाज के लिए भी।

१७ जनजागरण ही है समाधान का मार्ग :

यद्यपि हम राजनीतिक निरपेक्ष समाज व्यवस्था पर चर्चा कर रहे थे, लेकिन कुछ लोगों ने मेरे और हम लोगों की संस्था के विषय में कुछ जानना चाहा है। हम लोगों ने लगभग 70 वर्ष पूर्व सामाजिक समस्याओं पर रिसर्च करना शुरू किया था, और मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान के नाम से जीवन भर इस प्रकार की समस्याओं पर रिसर्च किया। इस रिसर्च में समाज की धार्मिक समस्याएं हैं, सामाजिक समस्याएं, आर्थिक, राजनीतिक और संवैधानिक समस्याएं शामिल की गई और इस प्रकार की सभी समस्याओं पर लगातार चिंतन मंथन किया गया। इस चिंतन मंथन में अनेक प्रकार के प्रयोग भी हुए। 25 दिसंबर 2020 को हम लोगों ने अपने चिंतन मंथन के निष्कर्ष प्रकाशित किये। इन 70 वर्षों में इस रिसर्च में अनेक प्रकार की संस्थाओं, संगठनों या विद्वानों ने भाग लिया। उनमें से अनेक लोग तो अब जीवित नहीं है और कुछ नए लोग भी जुड़ते रहे हैं। हम लोगों ने ऐसी हर समस्या पर बहुत बारीकी से चिंतन किया, उनके कारण खोजे उनका व्यावहारिक धरातल पर स्वरूप समझा, उसके लाभ और हानि पर विचार किया और तब उसके बाद उन समस्याओं के समाधान भी समाज के सामने प्रस्तुत किये। अब इस रिसर्च का कार्य बहुत ही औपचारिक तरीके से चल रहा है लेकिन रिसर्च के आधार पर जन जागरण का कार्य भी शुरू किया गया है। कोरोना के कारण कुछ वर्ष यह जन जागरण नहीं हो सका लेकिन अब वह कार्य धीरे-धीरे प्रगति पर है। मैं आपको स्पष्ट कर दूं कि समाज की वर्तमान असंतोष जनक परिस्थितियों का समाधान जन जागरण से ही हो सकता है।

हम लोगों की टीम इस प्रकार का जन जागरण कर रही है। मैं भी इस उम्र में फेसबुक और व्हाट्सएप के माध्यम से इस प्रकार के रिसर्च के निष्कर्ष को जन जागरण में सम्मिलित करने का प्रयास करता हूँ। यही संक्षिप्त हम लोगों का इतिहास है यही वर्तमान है।

हम आपको यह बात भी स्पष्ट कर दें कि हम कोई नई संस्था या नया संगठन बनाने की नहीं सोच रहे हैं हमारा यह मानना है कि वर्तमान समय में दुनिया में जो बुराइयां या कमजोरी दिख रही है वे यद्यपि बहुत बड़ी-बड़ी दिख रही है लेकिन उनके समाधान बहुत साधारण है। कोई बहुत बड़ा समाधान करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह अवश्य है कि इन बुराइयों का लाभ उठाने में सारी दुनिया में अनेक स्वार्थी शक्तियां सक्रिय है। इन स्वार्थी लोगों से बचकर हम सब लोगों को समाधान की दिशा में आगे आना पड़ेगा। समाधान बहुत छोटे-छोटे हैं, उनके समाधान के उद्देश्य से हम आप सबको मिलकर लगातार विचार मंथन करना पड़ेगा। विचार प्रचार तो अपने आप हो जाएगा, विचार मंथन से ही हम कोई आगे का मार्ग निकाल सकते हैं। मैंने तो इस संबंध में दो कार्यों को महत्वपूर्ण माना है, एक आम लोगों की शराफत को समझदारी में बदलने का प्रयास किया जाए। दूसरा लोकतंत्र को लोक स्वराज की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए। यदि हम इन दो दिशाओं में मजबूती से आगे बढ़ सके तो समस्याओं के समाधान की शुरुआत भी हो जाएगी और इन समस्याओं का लाभ उठाने वाली शक्तियां भी कमजोर हो जाएगी। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप विचार मंथन और लोक स्वराज इन दोनों दिशाओं में गंभीरता से सोचें। हमारे सभी साथी पिछले कुछ महीनों से इन दोनों दिशाओं में निरंतर सक्रिय हैं।

१८ संतुलनवादी हिंदुत्व की प्रयोगशाला सक्रिय है :

आज हम इन समस्याओं के समाधान पर चर्चा करके इस चर्चा का समापन करेंगे। हम गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश के मार्गदर्शन में काम करने वाले लोग हैं। गांधी ने हमें 'वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व' के मार्ग पर आगे बढ़ने का संदेश दिया है। आचार्य विनोबा जी ने हमें आचार्य कुल के माध्यम से आगे बढ़ने की सलाह दी है। जयप्रकाश जी ने हमें लोक-स्वराज की महत्ता बताई है। इन तीनों के आधार पर हम सक्रिय हैं। वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व के प्रयोग और विस्तार के लिए हमारे सभी मित्रों ने मिलकर 'मार्गदर्शक सूत्र संहिता'

नाम से तीन पुस्तकें लिखी हैं। वे पुस्तक मेरे जीवन भर के रिसर्च के आधार पर लिखी गई है। यह तीनों पुस्तक 2 अक्टूबर तक छप कर तैयार हो जाएगी। आचार्य कुल को आगे बढ़ाने के लिए, हम सब लोग पिछले सात आठ महीने से लगातार ऐसे गंभीर विचारकों की टीम तैयार कर रहे हैं, जो वर्तमान राजनीति का मार्गदर्शन कर सकेगी। प्रतिदिन रात को 8:00 बजे से 9:00 तक जूम पर बैठकर सब लोग मानसिक व्यायाम करते हैं। इस व्यायाम के अंतर्गत गंभीर विचार मंथन होता है और इस विचार मंथन के आधार पर यह टीम तैयार हो रही है।

लोक-स्वराज को आगे बढ़ाने के लिए कुछ कलाकारों ने मिलकर एक फिल्म बनाई है जिसका नाम है 'प्रयोग'। इस फिल्म के माध्यम से हम समाज को ''हमें सुराज नहीं स्वराज चाहिए'' यह संदेश देने का प्रयास करेंगे। यह फिल्म भी 2 अक्टूबर तक तैयार हो जाने की उम्मीद है। इस तरह हम लोग तीन अलग-अलग दिशाओं में एक साथ मिलकर आगे बढ़ने के लिए सक्रिय है। हम लोगों का मुख्य कार्यालय रामानुजगंज में है और ब्रांच रायपुर शहर तथा दिल्ली में भी है। मैं तो अब संन्यास आश्रम में हूँ, वृद्धावस्था के कारण सक्रिय नहीं रह पाता। मैं रायपुर में ही रहता हूँ। लेकिन हमारे सब साथी पूरी तरह सक्रिय है। हमें पूरा विश्वास है कि हम जल्दी ही इन समस्याओं के समाधान के लिए एक अच्छा जन जागरण कर सकेंगे। इस जन जागरण के आधार पर नरेंद्र मोदी सरकार आगे आसानी से बढ़ सकेगी। हमें साम्यवादियों का विरोध झेलना पड़ रहा है और संघ के लोगों का अच्छा समर्थन मिल रहा है। मुसलमान, सावरकरवादी और गांधीवादियों की भूमिका लगभग तटस्थ है। हम जानते हैं कि अपने सीमित संसाधनों में हम लोग इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते लेकिन हम लंका पर चढ़ाई के लिए पुल बनाते समय गिलहरी की भूमिका से ही संतुष्ट और आशान्वित है।

प्रश्नोत्तर :

पत्र क्र.1- श्री सीताराम शेरपुरी, तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, मऊ शेरपुर, समस्तीपुर, बिहार

आज ज्ञान तत्व 449 मिला। पढ़ा लाभ ही लाभ मिला। ज्ञान तत्व के प्रत्येक अंक में राष्ट्रियता की झलक रहती है। समस्या मूलक हर मुद्दों को सलीके से उठाया जाता है। आप के बेबाक विचार से मैं अक्षरशः सहमत हूँ।

पत्र क्र.2- गीता माई रास (प्रधान सचिव), कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, 178, चौथा मुख्य रास्ता, छठवाँ क्रास, चामराजपेट, बेंगलुरु- 560018, दूरभाष- 080-26617777

ज्ञान तत्व 450 पत्रिका प्राप्त हुई। **"विविध विषयों पर मुनि जी के लेख"** पठनीय और विचारात्मक होते हैं। कबीर नाम से सम्बन्धित विषय (जीवनपथ) रोचक है। जब तक देश के नेता अपने स्वार्थ से जुड़े रहेंगे तब तक नागरिक सुरक्षा क्या देश का ढांचा भी गिर सकता है। आपकी पत्रिका हर तरह से विचारों का समाधान करती प्रकाशित होती है, किन्तु उसे पढ़कर अपनाने वाला कौन है? और आध्यात्मिक विचारों से भी जीवन दर्शन करती है। ज्ञान तत्व पत्रिका का मुखर सत्य भाव से प्रकाशित है। उत्तम-उत्तम भावनाओं से प्रकाशित पत्रिका के लिए शुभकामनाएँ।

पत्र क्र.3- वीरेंद्र भारती (स्वतन्त्र पत्रकार), पोस्ट बॉक्स -18, पौडी गढ़वाल, उत्तराखंड-246001

जीवनपथ उपन्यास (लेखक नरेंद्र जी के संदर्भ में) काबुल अफगानिस्तान से विस्थापित खान साहब की बेटी सिम्मी तथा उनके संवाद अत्यंत हृदयस्पर्शी है। सिम्मी का अपने पिता से यह कहना आपने हमें इस अजीम मुल्क में जीवन दिया है। माना कि यहां कुछ कमियां है लेकिन वे नयाब खुशियां भी है जिनकी दुनिया में और कहीं कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सिम्मी को दुलार कर खान का यह कहना कि जितनी अजीज तुझे अपनी सरजमीन है क्या वह हक मुझे अपनी जमीन से लगाव का नहीं है।

उपन्यास भावनाओं संभावनाओं और यथार्थ की कड़वी सच्चाई का अनुपम और संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करता है। हालांकि मुझे (समीक्षक को) इसकी तीसरी किस्त (एपिसोड) का ही एक अंश प्राप्त हो पाया जो 16 अप्रैल से 30 अप्रैल के ज्ञान तत्व पाक्षिक के पृष्ठ संख्या 18 से 22 तक में वर्णित है। परंतु मात्र एक अंश पढ़ने से लगा कि नरेंद्र जी के इस उपन्यास जीवन पथ में जाति, धर्म, क्षेत्र की सीमाओं से उठकर मानवीय मूल्यों का व्यापक

चित्रण होगा। इसलिए इस समग्र उपन्यास को पढ़ाने हेतु बहुत उत्सुक हूं। आशा है कि लेखक और ज्ञान तत्व पत्रिका मेरी उत्सुकता का ध्यान रखते हुए मुझे इसकी एक प्रति अवश्य भेजने का कष्ट करेंगे।

सिम्मी का अपने पिता से यह कहना की कुदरत ने (अर्थात ऊपर वाले ने) तो तमाम जमीन को आबाद किया है परंतु लोगों ने न जाने क्यों मुल्कों की सरहदों में तकसीम कर दिया। सिम्मी के इस व्यापक मानवीय दृष्टिकोण ने एक ही वाक्य में वसुधैव कुटुम्बकम की विवेचना की मानवीय जरूरत समझता दी।

जबकि दूसरी ओर खान साहब भी पूरी तरह सिम्मी के नजरिए से सहमत इसी मानवीय अवधारणा को आगे बढ़ते हुए कहते हैं सत्ता के हवासियों ने सियासत के उस मोहरे से बांट दिया। जिसे इसके निजाम का जिम्मेदार बनना था। पता नहीं लोग इस बात को कब समझेंगे कि कोई भी निजाम लोगों को इंसाफ और हिफाजत देने के लिए होता है न कि उन्हें हदों में बाधने के लिए। लोग निजाम को हुकूमत का दर्जा देकर इसे बेइज्जत करते हैं।

अपने उपन्यास जीवन पथ में नरेंद्र जी वसुधैव कुटुम्बकम की व्यापक माननीय अवधारणा को अपने पत्रों के संवाद से स्पष्ट रेखांकित करवाते हैं, उपन्यास की पात्र (वास्तविकता अथवा काल्पनिक) सिम्मी का यह कहना की मूल बात यह है कि निजाम और हुकूमत के बीच का फर्क तो हमें पहचाना ही होगा और फिर आवाम की इच्छाओं की निजाम को अमल में लाना होगा, वरना जिंदगी की कभी गुलामी से मुक्ति नहीं मिल पाएगी।

उपन्यास जहां नैसर्गिक मानवीय आजादी जीवन और सम्मान के अधिकार की पुरजोर वकालत करता प्रतीत होता है वही आज हिंसा और युद्ध के नितांत अमानवीय पक्ष पर भी अपनी चिंता व्यक्त करता है। इस अशांति और अहंकार से प्रभावित विस्थापन की पीड़ा का भी मार्मिक वर्णन करता है आज इंसानियत के अस्तित्व की हिफाजत सभ्यता की कसौटी पर नहीं बल्कि हथियारों से करना चाहते हैं।

विस्थापन की पीड़ा के अनेक पहलुओं को खान साहब के पात्र के रूप में मार्मिकता से चिंहित रेखांकित किया गया है। विस्थापन चाहे किसी युद्ध से दूसरे देश विस्थापित होने का हो, चाहे अपने घर गांव और क्षेत्र से मजबूरीवश बसने का हो अथवा जीविका और जमीन से बेदखली का हो वह विभिन्न रूपों में दुखदाई ही होता है। जैसा की इस उपन्यास में उसे प्रदर्शित किया गया होगा।

अंत में मानवता के उस प्रश्न पर भी श्री नरेंद्र जी ने जीवनपथ के उपरोक्त अंश में प्रकाश डाला है जो अंततः जाति, धर्म, भाषा, सत्ता और अन्य जटिलताओं से ऊपर उठकर अलग-अलग मजहबों के लोगों द्वारा एक दूसरे की सहायता के रूप में प्रकट हुआ है। लोगों का इंसानियत और इंसानी मूल्यों में विश्वास को मजबूत करता है तथा मनुष्य के अस्तित्व को सांप्रदायिकता के संकीर्ण नजरिये से व्यापक मानवीय पक्ष व पहलू के विस्तार को मान्यता मिलती है।

उत्तर- आप सभी का आभार, आपके पत्र न केवल हमारा उत्साहवर्धन करते है बल्कि मार्गदर्शन भी करते हैं। 'जीवनपथ' उपन्यास पुस्तक के रूप में छप कर हमारे पास आ चुकी है। 271 पृष्ठ की पुस्तक बेहद कम खर्च में 100 रु. डाक खर्च सहित भुगतान कर रामानुजगंज कार्यालय से आप माँगा सकते हैं। कार्यालय का संपर्क सूत्र है 8318621282

6001. धर्म हमेशा गुण प्रधान होता है, उपासना या संगठन प्रधान नहीं। समाज की मान्यताएं और व्यवस्थाएं परिवर्तनशील होती हैं किन्तु धर्म की नहीं। विशेषकर उस समय, जब धर्म गुण प्रधानता से हटकर कर्मकांड प्रधान हो जावे।